eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

भारतीय मानव समाज में दहेज परंपरा का एक मनौवेज्ञानिक अध्ययन

[1]डॉ0 कृपाल सिंह
[1]पूर्व शोधार्थी, मनोविज्ञान, एस0वी0 कालेज अलीगढ।

Received: 15 June 2018, Accepted: 15 July 2018, Published on line: 15 Sep 2018

Abstract

आज तक भारतीय समाज में हिन्दू विवाह से संबन्धित अनक समस्याओं में से मुख्य समस्या में दहेज प्रथा को माना जाता है। वैसे तो बाल विवाह, विधवा पुनर्विवाह, निषेध जैसी अन्य समस्याऐं भी भारतीय मानव समाज से संबन्धित ही हैं फिर भी दहेज ने आधुनिक युग में विकराल रूप धारण कर लिया है इसीलिए कहा जाता है कि भारतीय को जिस प्रथा से अत्यधिक क्षति उठानी पड़ती है, वह है दहेज प्रथा। यह भारतीय समाज में पाया जाने वाला एक ऐसा अभिशाप है जो आज भी सरकारी गैर सरकारी प्रयासों के बावजूद एक प्रमुख समस्या बना हुई है दहेज प्रथा स्वयं में तो एक अभिशाप है साथ ही यह अन्य समस्याओं, जैसे भ्रष्टाचार इत्यादि की भी जड़ हैं। 1961ई0 में दहेज निरोधक अधिनियम पारित होने के बाद भी यह समस्या समाप्त नही हो पायी है।

मुख्य शब्द– दहेज, सामाजिक, बुराई, आत्महत्या, झूठी प्रतिष्ठा आदि।

प्रस्तावना

एनसाइक्लोपीडिया ब्रिट्रेनिका के अनुसार दहेज वह सम्पत्ति हैं जो एक स्त्री विवाह के समय अपने साथ लाती है अथवा उसे उसके माता पिता द्वारा दी जाती है।[1]

चार्ल्स विनिक के मत के अनुसार दहेज ये बहुमूल्य वस्तुऐं है जो कि किसी एक पक्ष को व्यक्ति विवाह के समय प्रदान करता है।

फेयर चाइल्ड के मत के अनुसार दहेज यह धन या सम्पत्ति है जो विवाह के अवसर पर लडकी के माता पिता या अन्य निकटतम परिचितों द्वारा दिया जाता है।''[2]

दहेज प्रथा के कारण

भारतीय समाज में अन्तवर्ण विवाहों पर रोक अन्तर्वण विवाहों के समाप्त होने और वर्ण जातियों एवं उपजातियों में विभाजित होने से जीवन साथी के चुनाव का क्षेत्र सीमित होने से योग्य स्तर के वर चुनने की समस्या गंभीर हो जाती है। अतः दहेज की माँग बढ़ती ही जा रही है।[3]

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

कुलीन विवाहों पर रोक – प्रत्येक हिन्दू की अपनी लड़की का अपने से उच्च कुल में विवाह की इच्छा और कुलीन परिवार में लड़कों की कमी होने से दहेज की माँग बढ़ती ही जा रही है।

उच्च शिक्षा एवं व्यक्तिगत प्रतिष्ठा– उच्च शिक्षा प्राप्त और अच्छे व्यवसाय में संलग्न लड़के की सामाजिक आर्थिक स्थिति ऊँची हो जाती है जिससे उसका विवाह मूल्य बढ़ जाता है ।

धन का महत्व – आधुनिक समाज में धन के आधार पर ही व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा निश्चित होती है इसके अतिरिक्त योग्य वर के लिए सामाजिक प्रतिस्पर्धा के कारण विवश होकर कन्या पक्ष को सामर्थ्य से अधिक दहेज देना पड़ता है।[4]

महँगी शिक्षा– लड़कों को उच्च शिक्षा दिलाने हेतु माता पिता को अधिक धन व्यय के कारण कभी–2 कर्ज भी लेना पड़ता है । इसको चुकाने हेतु दहेज में अधिक धन की माँग करते हैं ।

झूठे प्रदर्शन की भावना– भारतीय समाज में अपनी उच्च स्थिति के प्रदर्शन हेतु लोग अधिक धन लेने देने में प्रतिष्ठा समझते हैं अतः अन्य लोगों के लिए यह समस्या बन जाती है ।

दहेज प्रथा के दुष्परिणाम–

दहेज प्रथा के परिणाम स्वरूप बेटी को मॉ के गर्भ में ही मार डालते हैं, जिससे हमारे देश में लड़कियों की संख्या पुरूषों से कम है ।

पारिवारिक विघटन– जो वधू अपने साथ अधिक दहेज नहीं लाती है उसे ससुराल में दुव्यर्वहार व अपमान सहना पड़ता है और पारिवारिक वातावरण दूषित व संघर्षपूर्ण हो जाता है जिससे वैवाहिक जीवन कष्टमय हो जाता है और पारिवारिक विघटन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है ।

आत्महत्या– दहेज के कारण निरन्तर दुव्यर्वहार और अपमान से तंग आकर लड़कियाँ आत्महत्या कर लेती है कभी–2 माता पिता के काफी प्रयत्नों के उपरान्त भी योग्य लड़का नहीं ढूढ पाने से उन्हें चिन्तामुक्त करने के लिए लड़कियाँ आत्महत्या कर लेती हैं ।

बेमेल विवाह– अधिक दहेज देने में असमर्थ माता पिता अपनी बेटी का विवाह किसी अपंग, अयोग्य या अधिक उम्र व्यक्ति के साथ कर देते हैं जिससे विवाहिता जीवन भर दुखी जीवन व्यतीत करती है ।[5]

विवाह टूट जाना – कई बार दहेज की राशि न जुटा पाने पर विवाह के लिए आयी हुई बारात वापस चली जाती है या बाद में लडकी को छोड दिया जाता है ।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

अनैतिकाता – दहेज के कारण अधिक उम्र तक विवाह न होने के कारण यौन इच्छा से वशीभूत होकर कभी–2 लड़कियाँ अनैतिक कार्यो की ओर प्रवृति हो जाती है ।

दहेज प्रथा खत्म करने के उपाय–

जीवन साथी का चुनाव स्वयं लड़कियों द्वारा किया जाना चाहिए जहाँ माता पिता के द्वारा विवाह तय किये जाते है वहाँ दहेज की रकम पहले ही निर्धारित कर ली जाती है यदि यह अधिकार स्वयं विवाह करने वाले अपने हाथ में लें ले तो अवश्य ही स्थिति में परिवर्तन होगा ।

प्रेम विवाह– युवक युवतियाँ प्रेम विवाह से लोक लज्जा के कारण डरते हैं जबकि यह दहेज प्रथा को समाप्त करने में सहायक हो सकता है अतः उन्हें अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन करना होगा और दृण निश्चय करना होगा कि उन्हें सुंदर सुशील एवं सुसंस्कृत जीवन चाहिए न कि दहेज ।

अन्तर्जातीय विवाह–

दहेज प्रथा उन्मूलन हेतु अन्तर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहित करना आवश्यक है जिसके वर के चुनाव क्षेत्र विस्तृत होगा तथा योग्य वरों के मिलने में कठिनाई नहीं होगी परिणामतः दहेज प्रथा स्वयं ही समाप्त हो जाएगी।

समाज में जनमत तैयार करना – दहेज को समाप्त करने हेतु स्वस्थ जनमत निर्माण की आवश्यकता है । जनसम्पर्क के माध्यमों से समाज को दहेज की बुराई से अवगत कराना जिससे भारतीय समाज दहेज प्रथा का विरोध कर सके ।[6]

वैधानिक प्रयास – दहेज निरोधक अधिनियम को अधिक कठोर बनाए जाने की आवश्यकता हैं, अधिनियम अपने आप में किसी समस्या का समाधान नहीं होता है । अतः इस अधिनियम को लागू करके इस बुराई पर अंकुश लगाया जा सकता है ।

निष्कर्ष–

दहेज प्रथा सामाजिक अनेक बुरी परमपराओं के रूप में फैली हुई है। विवाह के समय उसे अनिवार्य समझा जाता है । यह प्रथा केवल समाज के लिए ही अभिशाप सिद्ध नहीं हुई वरन इस प्रथा ने न जाने कितने व्यक्तियों के जीवन को नरकीय बना दिया है। जिसके कारण आये दिन दुष्परिणाम सुनाई दे रहे हैं। दहेज न लाने वाली लड़कियाँ या तो तिल–2 कर घुटती रहती हैं या आत्महत्या कर लेती हैं या उसके ससुराल वाले किसी न किसी तरह उसे मार डालते हैं। समाचारों, अखबारों में आए दिन ऐसे समाचार आते रहते हैं। दहेज प्रथा के दुष्परिणामों की और अनेक मिसालें हैं कुछ लोग इस समस्या के कारण कन्याओं को गर्भ में ही हत्या करवा देते हैं दहेज के लोभी यह भूल जाते हैं

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

कि उनकी भी बहन व बेटियाँ हैं । समाज के लोगों को यह सोचना चाहिए कि यदि इसी तरह का दुर्व्यवहार उनकी अपनी लड़कियों और बहनों के साथ हो तो उनके दिलों पर क्या बीतेगी ? लेकिन समाज के लोग इसे समझ ले तो सभी दंपतियों का जीवन सुखी व समृद्ध बन सकता है और भारतीय जनमानस के दिमाग में यह मनोवैज्ञानिक दबाब रहता है इसे समाप्त किया जा सकता है ।

संदर्भ सूची–

1. संगीता एवं पाण्डेय तेजस्कर : समाज कार्य – सामाजिक संरचना की समस्याऐं, निर्देशक जुबली 'एच' फाउण्डेशन लखनऊ, पृ.सं. बी–226
2. उपरोक्त पृ. 242
3. महाजन, डॉ. संजीव, समाजशास्त्र भारतीय सामाजिक संगठन, राजलक्ष्मी पब्लिकेशन ए–64, साकेत, मेरठ, 2014 पृ.सं. 139
4. महाजन, डॉ. संजीव, समाजशास्त्र भारतीय सामाजिक संगठन, राजलक्ष्मीपब्लिकेशन ए–64, साकेत, मेरठ, 2014 पृ.सं. 141